समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

RNI No. MPHIN/2001/11140

वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– 31 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

बॉग्लादेश भी रोहिंग्याओं को खतरनाक मानता है

डॉ. किशन कछवाहा

'' रोहिंग्या म्यॉमार के मूल निवासी नही बल्कि शरणार्थी है। म्यॉमार ने शरण दी, लेकिन बदले में मिली देश में आतंकी गतिविधियॉ और एक अलग देश की मॉग तथा शांत जनता पर हमले'' ये शब्द हैं म्यॉमार की काउंसलर आन सान सूची के । चुपचाप घुस कर आ गये ये रोहिंग्या भारत की सुरक्षा के लिये भी खतरा हैं। इसलिये सुरक्षा कारणों से सरकार उन्हें देश के भीतर नही रखना चाहती । इनसे देश को साम्प्रदायिक सद्भाव भी बिगड़ेगा । इन्हे शरण देने के लिये जिसे तरह से मुसलमान एक जूट हो रहे है, वह भी चिन्ता का कारण है। ये घुसपैठिये हैं, शरणार्थी नही। इनके सम्बन्ध अलकायदा जैसे आतंकी संगठन तथा आई.एस.आई.एस से भी है। दिल्ली में भी इन रोहिंग्याओं से खतरा मंडरा रहा है। दिल्ली के कालिंदी कुंज में बसे ऐसे परिवारों को उनके रहनुमाओं के कारण जमीन और शरणार्थी उच्चायोग से शरणार्थी कार्ड भी मिल गये हैं। यहां 37 परिवारों के 230 सदस्य हैं। जब भारत सरकार ने इनकी पहचान कर देश के बाहर, करने की मंशा जतायी तो इनमें से दो नें सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर कर दी। जिस जगह पर रोहिग्या बसे है, वहॉ जकात फाऊंडेशन आफ इंडिया नामक एक गैर सरकारी संस्था का बोर्ड लगा हुआ हैं। जो अमेरिका, बिटेन और कनाडा की कई संस्थाओं से जुड़ी हुयी है, सारी सुविधायें यही संस्था जुटा रही है। प्रश्न उठता है कि उक्त जमीन जकात फाऊंडेशन की है तो क्या तत्कालीन संप्रग (कॉग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार) से घुसपैटियों को बसाने की इजाजत ली गयी थी। एक और कॉग्रेस नेता कपिल सिब्बल रोहिंग्याओं के पक्षधर है जबकि दूसरी तरफ दिल्ली सरकार के मंत्री (आप सरकार) इस मुद्दे पर बोलना नही चाहते। चेम्बर आफ कामर्स एंड इन्डस्ट्रीज जम्मू के अध्यक्ष राकेश गुप्ता कहते हैं कि '' हजारों की संख्या में जम्मू में बसे रोहिंग्या न केवल, फैल रहे हैं, बल्कि वे वैवाहिक सम्बध भी बनाने लगे है। जम्मू –कश्मीर के संविधान के अनुसार यहॉ देश के लोग ही नही बस सकते तो दूसरे देश के लोग कैसे वस गये ? ये तो शरणार्थी भी नही हैं। सरकार को भी इनके बसने की जानकारी नही है। आश्चर्य तो इस बात का है कि कुछ प्रख्यात वकील प्रशांत भूषण आदि इन रोहिंग्याओं की वकालत कर रहे है। इनमें कालीएस नरीमन, कपिल सिब्बल, राजीव घवन, अश्वनी कुमार और कोलिन गोंजाल्विस भी शामिल हैं। पुलिस की विशेष शाखा ने एक आतंकी सभी–उन–रहमान को गिरफ्तार किया है। उसके पास से हथियारों के अलावा भारत और बॉग्लादेश के फर्जी सिम कार्ड, फर्जी पहचान पत्र आदि बरामद हुये हैं। यह एक जिहादी से मिलने जा रहा था। पुलिस के अनुसार यह व्यक्ति रोहिंग्या मुसलमानों को प्रशिक्षण देने आया था। यह दिल्ली, बिहार, झारखंड आदि राज्यों के मदरसों से अलकायदा के लिये जिहादियों की भर्ती कर रहा था। कुछ रोहिंग्या मुसलमान आतंकी संगठनों के सम्पर्क में हैं–इस बात की पुष्टि लगातार खुफिया विभाग को हो रही है। पं. बंगाल में तो बॉग्लादेशी मुसलमानों और रोहिंग्याओं को योजनाबद्ध तरीके से बसाया जा रहा है। इसके पीछे तृणमूल सरकार की मंशा सिर्फ वोट बैंक की राजनीति तक सीमित है। हैदराबाद में भी गिरफ्तार रोहिंग्या आतंकी से काफी जानकारियॉ मिली हैं। वोट बैंक के लिये देश की सुरक्षा को ताक पर रखा जा रहा है। आश्चर्य तो इस बात का भी है कि देश के तथाकथित सेकुलर और भारत में रोहिग्याओं को बसाने का पक्ष रखने वाले इस बात का जवाब क्यों नही देते कि तुम इस्लाम के नाम पर बड़े–बड़े झंड़े लहराते हो, उन,उन इस्लामी देशों का गुणगान करने में कभी पीछे नही रहते,तो उन इस्लामी देशों से इन रोहिंग्या मुसलमानों को उनके अपने देशों में बसाने के लिये क्यों नही कहते ? इस्लामी भाई चारे का तकाजा तो यही कहता है कि विशेष विमान भेजकर इस्लामाबाद, ढ़ाका, जद्दाह, रियाद, बगैर वगैरत स्थानों पर इन म्यॉमार से आये मुसलमानों को बसाया जाए। वहॉ रोहिंग्याओं का मन भी लगेगा और इस्लामी भाई चारा भी बढ़ेगा। ऐसा न करने के बजाय हिन्दू देश भारत में रोहिंग्याओं को बसाना चाहतें हैं ? क्योंकि उनका मकसद आबादी में बढ़ोत्तरी करके मुस्लिम बहुल देश में तब्दील करना। इसके लिये रोहिंग्या हमदर्दों के कारगार प्रयास चल रहे हैं। आतंकी मसूद अजहर उनका आका बनकर भारत में इस्लामी आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिये एक नयी रोहिंग्या फौज तैयार कर रहा है।

रोहिंग्याओं का इतिहास

सन् 47 में भारत – पाकिस्तान के दुर्भाग्यपूर्ण बॅटवारे के परिणाम स्वरूप दो अलग – अलग राष्ट्र बने थे। मुसलमानों ने अलगराष्ट्र बनाने के लिये बड़ी संख्या में हिन्दुओं का नरसंहार किया, वही ऐसे ही कुकृत्यों का सहारा लेते हुये रोहिंग्या मुसलमानों ने बौद्धो का नरसंहार किया। वे उस समय पूर्वी पाकिस्तान (अब बॉग्लादेश) में शामिल होना चाहते थे। कश्मीर में सेना और पुलिस पर जैसे पत्थर बरसाती थी वैसे ही वर्मा में रोहिंग्या मुसलमान करते रहे हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के समय ब्रिटेन ने अलग राष्ट्र देने का लोभ देकर रोहिंग्या मुसलमानों को जापान से लड़ने के लिये तैयार किया था। इनके हाथो में हथियार दिये गये थे जिसका उपयोग जापान से लड़ने के बदले बौद्धों का सफाया करने के लिये किया गया। लगभग 20 हजार से अधिक बौद्धों का कत्ले आम किया गया। असंख्य बौद्ध महिलाओं के साथ वीभत्स अत्याचार किये गये थे। इन रोहिन्याओं के द्वारा वर्मा के माऊ क्षेत्र को पाकिस्तान में शामिल करने का प्रस्ताव भी जिन्ना के सामने रखा गया था। ये चाहे जब अपने देश में हत्या और आतंक का नंगा नाच करते रहें हैं। इन्होने एक आतंकी सेना भी बना ली थी जो पाकिस्तान जाकर प्रशिक्षण लेती थी और फिर बौद्वों की योजनापूर्वक हत्या करती थी। सन् 2012 में एक बौद्ध महिला का बलात्कार करने के पश्चात उसकी हत्या कर दी गयी थी तब से बौद्धों ने कड़ी टक्कर देना शुरू कर दी जिसका सिलसिला अभी तक थमा नही है। गत 25 अगस्त को रोहिन्या आतंकियों ने रखाईन प्रान्त के तीस पुलिस थाने और सेना की एक छावनी पर हमला कर दिया था। इन हमलों से पुलिस के दस जवान और एक सेना अधिकारी की मृत्यु भी हो गयी थी। म्यॉंमार में हिन्दुओं की हत्या हुई थी। मुस्लिमनेताओं सहित कतिपय विपक्षी दल भी मानवीय दृष्टिकोण अपनाने की बात कर रहे है। उन्हे रोहिन्या आतंकियों का जिहाद दिखाई क्यों नही देता ? क्या हमारे देश के लोगों की सुरक्षा की कीमत पर हमें ऐसा करना चाहिये ? ऐसे लोगों को पनाह नही दी जा

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

समाचार

मुगलों ने दमन के बल पर किया राज

विश्व हिन्दु परिषद् व सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य राज्याभिषेक समारोह समिति के संयुक्त तत्वधान में भारत के अंतिम हिन्दु सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य के राज्याभिषेक दिवस पर गत दिनों नई दिल्ली में गॉधी स्मृति एवं दर्शन समिति में एक समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सहसरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल उपस्थित रहे। उन्होने कहा कि हेमचंद्र विक्रमादित्य की सेना में लगभग पचास हजार घुड़सवार थे, डेढ़ हजार से अधिक हाथी, एक लाख से अधिक अन्य सैनिक, 51 बड़ी तोपे और सैकड़ों की संख्या में छोटी तोपे थी। बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, वर्तमान हरियाणा और दिल्ली क्षेत्र के सैनिक सम्राट हेमचन्द्र के पास थे। मोहम्मद गोरी के समय से दिल्ली मे जो इस्लाम की सत्ता स्थापित हुई थी, सम्राट हेमचन्द्र ने उसको बड़ी चुनौती दी थी। अनेक युद्ध जीतते हुये उन्होने दिल्ली पर एक बार पुनः हिन्दु शासन स्थापित किया था। लेकिन पानीपत के युद्ध के कारणों से उनकी पराजय हुई। हार और जीत महत्वपूर्ण होती है लेकिन प्रत्येक हार और जीत के विश्लेषण देती है। मुगलों की सत्ता अरब देशों से सातवी शताब्दी में आंगे बढी तो कुछ वर्षो बाद वे भारत की भूमि पर आक्रमणकारियों के रूप में आ धमके, उनका उद्देश्य शासन ग्रहण करना मात्र नही था। जहां – जहां उन्होने शासन प्राप्त किया वहां–वहां के नागरिको को वह इस्लाम के नियंत्रण में ले आये। पूरा उत्तरी अफ्रीका, पूरा पश्चिमी एशिया और कुछ हिस्से यूरोप के कुछ हिस्से मध्य एशिया के कजाकिस्तान से लेकर रूस से चीन की ओर जाने वाले सारे क्षेत्र इस्लाम के नियंत्रण मे आ चुके थे। चार वर्ष से ज्यादा लड़ने की हिम्मत किसी भी देश में नही थी । उनकी अपनी संस्कृति सभ्यता समाप्त होकर इस्लाम में परिवर्तित हो गयी। लेकिन भारत में सातवी शताब्दी से लेकर बारहवी शताब्दी तक का युद्ध भारत के वीरों ने लड़ा। लगभग साढे तीन चार सौ वर्षो के बाद ही वे सिंध–पंजाब को पार कर दिल्ली तक आ सके। लेकिन भारत ने इसको स्वीकार नही किया। बार –बार योद्धा देश को इस्लामी आक्रमणकारियों के नियंत्रण से स्वतंत्र कराने के लिये संघर्ष करते रहे। बारहवी शताब्दी से लेकर 1974 का यह संघर्ष है। हम बहुत बार हारे और जीते, लेकिन अंततः विजयी रहे।

चिकित्सालय का किया शुभारंभ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्यवंसेवक स्वास्थय, शिक्षा सहित अन्य क्षेत्रों में रात–दिन सुदुर स्थानों पर सेवा कार्य कर रहे है। पहाड़ी क्षेत्रों में स्वास्थय सुविधाये पूरी तरह से नही मिल पा रही है। इसी को देखते हुये स्वामी विवेकानंद हेल्थ मिशन सोसायटी द्वारा चार धाम के मुख्य पडाव, यमुनोत्री धाम के बड़कोट में धर्मार्थ चिकित्सालय खोला गया है, जिसका तीर्थयात्रियों सहित स्थानीय लोगों को भी लाभ मिलेगा।'' उक्त बाते राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र. प्रचारक श्री अलोक कुमार ने कही। वे पिछले दिनों बड़कोट के स्वामी विवेकानंद धर्मार्थ चिकित्सालय तथा विशाल स्वास्थय शिविर के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर विभाग संघ संचालक श्री जयपाल सिंह ने गणमान्यजनों का आभार व्यक्त किया।

सत्य की विजय का पर्व है विजयदशमी

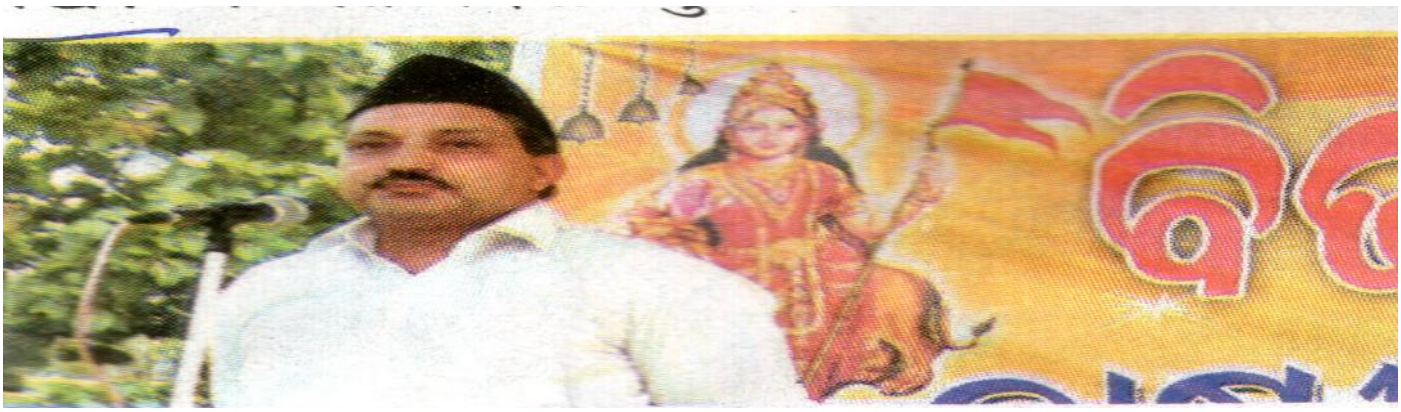

आसुरी शक्ति का विनाश करने के लिये देवी दुर्गा ने अवतार लिया और दुष्टों का नाश किया। इसलिये विजयदशमी का पर्व असत्य पर सत्य की जीत का प्रतीक है।'' उक्त विचार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख श्री नरेन्द्र कुमार ने रखे। वे गत दिनो भुवनेश्वर में आयोजित विजयादशमी उत्सव में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। उन्होने कहा था कि सज्जन शक्तियों के संगठित होने पर ही अधर्म पर धर्म की जीत पक्की होगी। व्यक्ति निर्माण और सज्जन शक्ति के जागरण कार्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ लगा हुआ है।

भावाभिभूत कर देने वाले कलम के धनी

— डॉ. सम्पूर्णानन्द

श्री नानाजी देशमुख तथा कुछ अन्य मित्रों ने यह इच्छा व्यक्त की कि मै इस संग्रह पर ''पॉलिटिकल डायरी'' के बारे में, जिसमें से यदि सब नही तो अधिकांश लेख पहले विभिन्न अवसरों पर दिल्ली के ''ओर्गेनाइजर'' में 'डायरी' स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित हो चुके हैं अपना कुछ मंतव्य लिखूँ। मैं तुरन्त तैयार हो गया। श्री दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के महान् नेताओं में से एक थे, और मैं अपने संपूर्ण राजनीतिक जीवन में कांग्रेस का सदस्य रहा हूँ। इन परिस्थितियों में कुछ लोगो को आश्चर्य हेा सकता है कि यह अनुरोध कैसे किया गया ? और स्वीकार कर लिया गया ? मैं इस– आश्चर्य को अनुभव करता हूँ। परन्तु बात ऐसी है कि यदि अपने देश में जनतंत्र की जड़े मजबूत करनी है तो यह सहिष्णुता के उस महान गुण की मात्र सामान्य अभिव्यक्ति है, जिस पर आचरण करना हम सबको सीखना चाहिये। कोई भी व्यक्ति सत्य पर अपना एकाधिकार होने का दावा नही कर सकता। कोई भी व्यक्ति परस्पर –विपरीत प्रतीत होने वाले सभी भिन्न–भिन्न पहलुओं के जिससे 'सत्य' तक पहुँचा जा सकता है, एकमेव जानकार हेाने का भी दावा नही कर सकता। एक सच्चे जनतंत्र में हर व्यक्ति का यह अधिकार एवं कर्तव्य होना चाहिये कि वह 'सत्य' को जैसा समझता है, उसको सुज्ञात विशिष्ट सीमाओं के अंतर्गत अभिव्यक्त कर सके और इसका ध्यान रखे कि उसके समान ही हर व्यक्ति को वही स्तंत्रता प्राप्त हो सके। हममें से हर व्यक्ति द्वारा संगृहित विभिन्न पहलुओं केा ईमानदारी के साथ एकत्र रखकर ही हम 'सत्य' के निकट तक पहुँचने का प्रयास कर सकते हैं। ज्ञानप्राप्ति के लिये, जिससे हमें मानवता की सेवा करने में सर्वोत्तम सहायता मिल सकती हैं, जो लोग चिंतन एवं दूसरों के साथ आदान–प्रदान की प्रक्रिया में तल्लीन रहते है, उनका यही रूख होना चाहिये। जो लोग केवल दूसरों पर विजय प्राप्त करने में ही रूचि रखते है, वे जनतंत्र की सेवा में सहायक नही हो सकते। सबसे बड़ी बात यह है कि प्राचीन ऋषि–मुनियों ने कहा है, 'वादे वादे जायते तत्वबोधः', हम तत्व–बोध नही चाहते है। यदि हम किसी के साथ वाद–विवाद में लगते हैं, तो हम वार्ता को 'तत्व–जिज्ञासा' से प्रेरित होकर करे, न कि दूसरे पक्ष पर विजय प्राप्त करने की अर्थात विजिगिषा की भावना से। हमे दिखाई देता है कि इन लेखेां को हम तीन विभागों में रख सकते है, पहली श्रेणी के लेख मुख्यतः राजनीतिक लेख है, जो मुख्यता अखबारी तर्क–वितर्क की दृष्टि से लिखे गये है। इन लेखों में निहित बातेां का अपने आप मे कोई महत्व नही है। इस प्रकार से, वे केवल उसी अवसर के लिये उद्दिष्ट थे, जिस समय वे लिखे गये। वे घात–प्रतिघात की भावना से, जो राजनीतिक संघर्षो, विशेषकर चुनाव–संघर्षो का वैशिष्ट्य है, इससे ओत–प्रोत है। वे भविष्य में उपयोगी सिद्ध हो सकते है, मै समझता हूँ कि इस संग्रह में उनके सम्मिलित किये जाने का यही औचित्य है। ताकि इनसे बाद के युग के पाठकों को वही मनोवैज्ञानिक उत्तेजना मिल सकेगी, जो उन पुराने दिनों मे भाग लेनेवालों के मनों में उद्भुत हुई थी। किसी प्रकार के मनोवैज्ञानिक आधार के बिना उन दिनों की घटनाये पढ़ने में नीरस लग सकती हैं। दूसरी श्रेणी के लेखों से घन्ष्ठि रूप से संबंधित है, परन्तु उनसे विस्तृत, गंभीर चिन्तनयुक्त एवं काफी विचारोत्तेजक है। ऐसे लेख ऐसे किसी के लिये भी अमूल्य सिद्ध होंगे, जो (मान लीजिये) एक दशक, शताब्दी या उसके बाद उन दिनों के इतिहास का अध्ययन करना चाहेंगे। उन्हे ऐसे लेखों से न केवल यह समझने मे सहायता मिलेगी कि क्या हुआ और ऐसा क्यो हुआ बल्कि उन्हे इसके बारे में भी समुचित कल्पना आ सकेगी कि कुछ विशेष व्यक्ति और नारे जन–मन को आकर्षित करने में क्यो सक्षम हो सके ? वह यह भी समक्ष सकेंगे कि विभिन्न दलों द्वारा जारी किये गये वक्तव्यों में तर्क का कौन सा 'रोल' रहा ? संक्षेप में, इन लेखों में वे सब मसाले विद्यमान है, जिनके बिना निकट अतीत का कोई भी इतिहास सुसम्बद्ध और ग्राहय नही हो सकेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि हम सबने अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार निकट अतीत के रूप –निर्धारण में हाथ बॅटाया। हम सबने उसके उस रूप–निर्माण में और उससे उस वर्तमान का विकास करने में जिसमें हम रहते है, अपना योगदान किया है, भले ही वह योगदान तुच्छतम क्यों न हो। यही वह निकट अतीत है – वह अतीत जो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पैदा हुआ जो भविष्य की सीढी बनने जा रहा है, जिसका हम सब भिन्न–भिन्न तरीके से स्वप्न देखते है। यहि आवश्यक है कि हम लोग विशेष रूप से अब, जब गर्द और गरमी कुछ शान्त हो गयी है, उदारतापूर्वक उस अतीत को समझने का प्रयत्न करे। उसे गलत समझकर या तर्क का स्थान भावना केा देखकर हम कुछ ऐसे भविष्य का निर्माण कर देंगे, जो बिलकुल अवांछनीय सिद्ध हो सकता है। इसलिये यह आवश्यक है कि हम किसी भी व्यक्ति को, जो इस विषय में कुछ कहना चाहता है,पूरा अवसर दे। हम हर कल्पना केा, स्वातंन्त्र्य एवं खुले विचारविमर्श को जनता के सामने आने देने का पूरा अवसर प्रदान करें, यही वह कारण है, जिससे मैने यह अनुभव किया कि यदि श्री दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों को पूर्ण प्रकाश में लाने मे सहायता करने के अनुरोध को अस्वीकार कर दूँ, तो मै अपने कर्तव्य से विमुख हो जाऊँगा। और स्मरण रखना चाहिये कि ये विचार किसी ऐरे–गैरे के विचार नही है। ये विचार हमारे समय के अत्यंत महत्वपूर्ण नेताओं में से एक नेता की कल्पनाओं की अभिव्यक्ति करते है' जो अपने देश के सर्वश्रेष्ठ हित–संपादन के लिये अपने को अर्पित कर चुका था, जो निर्मल चरित्रवाला था और जो एक ऐसा नेता था, जिसके वजनदार शब्द हजारों–हजार शिक्षित व्यक्तियों को भावाभिभूत कर देते थे। यदि हम उनसे सहमत नही है,तो भी हमें उनका उचित आदर करना चाहिये और हमें उनकी विवेचना करनी चाहिये। वे चुनाव तथा अस्थायी महत्व की अन्य घटनाये बीत चुकी है, पर देश कायम है वह देश जिसके नाम पर वे सारी गतिविधियाँ हुई थी। पुराने योद्धाओं से, जो हाथ मे तलवार लिये धराशायी हो गये, हम जो कुछ भी प्रकाश पा सकते है, उसे ग्रहण कर हमें देश के लिये अभी भी कार्य करना है। जो सफाई से लड़े और जिनके हृदय में कोई दुर्भावना नही थी, वे लोग किस दल के थे, इसका कोई महत्व नही है। वे एक–दूसरे की सज्जनता को पहचानते थे, और कभी किसी क्षण उनमें से कोई अस्थायी रूप से किसी मानवीय दुर्बलता का शिकार भी हो गया हो तो हमें रामचन्द्रजी द्वारा विभीषण को उपदिष्ट इन शब्दों को याद रखना चाहिये–मरणात्तुनिर्वैराणि। तीसरी श्रेणी के उन लेखों की भी चर्चा करना आवश्यक है, जिनकी संख्या दुर्भाग्य से बहुत कम है। इस श्रेणी के लेख वर्तमान समय की सीमा से बहुत आगे पहुँचे हुये है, यद्यपि वे अस्थायी रूप से उत्पन्न परिस्थितियों के आधार पर लिखे गये थे। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या स्वयं उपाध्यायजी ने उनको अनुभव किया था, या क्या उनका अनुभव करने के लिये उनके पास समय था। मै उदाहरण के लिये केवल एक की चर्चा करूँगा। 'आपका

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

पृष्ठ क्रं. 1 का शेष भाग

सकती जिनसे हमारी सुरक्षा को खतरा हो। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि क्योकि इन्हे शरण देने के उग्र आग्रह को लेकर जिस तरह से मुसलमान एक जुट हुये है, वह अत्यंत चिन्ता जनक सिथित है। बंगाल,दिल्ली और हैदराबाद के प्रदर्शन के दौरान उलेमा–ए–हिन्द और मुस्लिम कट्टपंथी (ए,आई,एम,आई,एम) सामने आयी है। यह पार्टी तो हैदराबाद को पाकिस्तान में मिलाने की मॉग करने वाले रजाकारों की ही पार्टी है। इनके भड़काऊ भाषण और संघ समर्थन का दर्पण आगामी भविष्य के संकेत दे रहा है। म्याँमार की यह जिहादी बीमारी दशकों पुरानी है। सन् 90 में आज से तीन दशक पहले भीषण नरसंहार करके कश्मीर से बलात भागजाने को मजबूर कर दिये गये, पाँच लाख से अधिक कश्मीरी पंडित अब भी तम्बुओं में रहकर नारकीय जीवन जी रहे है। उनके लिये किसी भी मानवाधिकार समर्थक ने मोर्चा नही निकाला। लाखों रूपये फीस लेने वाला वकील सर्वोच्च न्यायालय में खड़ा नही हुआ। तब इन सेकुलर और वामपंथियों की जबाने क्यें सिली रही। इसी व्यवहार और सोच से इनकी विचार धारा का दोगलापन जग जाहिर हो जाता है। इनकी कथनी और करनी दोनो निहायत स्वार्थो के लिये ही है। आज रोहिन्ग्या मुसलमानों के लिये भारत को सुरक्षित स्थान बतलाया जा रहा है जबकि कलतक कह रहे थे कि भारत में मुसलमानों के साथ दोयम अर्जे का व्यवहार तथा अत्याचार हेा रहे है। आज भारतीय परंपराओं का मजाक उडाना छोड़ ''वसुधैव कटुम्बकम'' जैसे सनातन हिन्दु धर्मी सिद्धान्त बखान किया जा रहा है। अभी हाल में ही माकया के सांसद रिताब्रत बनर्जी ने रहस्योद्घाटन किया कि लगभग पूरा का पूरा वामपंथ इस्लामी कट्टर पंथियों के कब्जे में जा चुका है। बॉग्लादेश भी जिन्हे खतरनाक मानता है, वे भारत के लिये निन्रापद्र कैसे हो सकते हैं ? ये कट्टर इस्लामिक होने के कारण परिवार नियोजन में भी विश्वास नही रखते। इन्हे आश्रय दिया गया तो आगामी बीस वर्षो में इनकी संख्या चालीस हजार से चालीस लाख पर पहुँच जायेगी। भारत में असदुद्दीन ओवैसी कतिपय कट्टर पंथी मुस्लिम नेताओं के साथ कुछ कॉंग्रेसी और वामपंथी नेता मानवता और देश की महान परम्पराओं का बखान कर रोहिन्ग्याओं को शरण देने के लिये सरकार पर दबाव बना रहे है।

आपके पत्र –

आज हर मंच से एक वाक्य सुनने को मिलता है कि 'हम भारत को पुनः विश्व गुरु बनाएगे।' लेकिन मेरा मानना है कि भारत ने वह पद केवल यहां के आश्रमों में दी जाने वाली शिक्षा से प्राप्त किया था। इसी शिक्षा से निकले हुए लोगों ने सारी दुनिया में डंका बजाया और भारत की संस्कृति और परंपरा के ज्ञान को बिखेरा। इसलिए अगर भारत को विश्व गुरु बनाना है तो उसकी पारंपरिक शिक्षा (गुरुकुल) पद्धति को फिर से चलन में लाना होगा। जिस दिन ऐसा हो जाएगा, उस दिन हमारा यह संकल्प पूर्ण होगा।

– जसवंत, जैसलमेर (राज.)

वर्षों से सत्ता पर काबिज रहे सेकुलरों नें 'भारत भाव' को अपमानित करने का मानेा युद्ध ही छेड़ रखा है। भारतधर्मी समाज को विघटित करने के रोजाना कुचक्र रचे जाते हैं। आज की शिक्षा व्यवस्था में इसकी झलक देखी जा सकती है। समूची शिक्षा पद्धति में इतिहास को तोड़ – मरोड़कर प्रेषित किया गया है। जो महापुरुष देश के नायक रहे, उन्हें नायक न बताकर आक्रमणकारियों का महिमामंडन किया जाता है। अब ऐसी पूरी शिक्षा व्यवस्था को बदलने का समय है। यह कार्य जल्द से जल्द होना चाहिए।

– डॉ, नंद कुमार,
रोहतक (हरियाण)

पृष्ठ क्रं. 3 का शेष भाग

मत' ? शीर्षक लेख वर्तमान मतदाताओं को लक्ष्य कर लिखे गये है, किन्तु प्रासंगिक रूप से उन विषयों पर भी प्रकाश डाला गया है, जो राजनीति विज्ञान की महत्वपूर्ण समस्याओं की समुचित जानकारी पर ही समाज की वैज्ञानिक व्यवस्था आधारित है। राजनीतिशास्त्र के न केवल वर्तमान काल के, अपितु उदाहरण के लिये भीष्म के समान प्राचीन काल के कुछ महान लेखकों ने भी उन समस्याओं की चर्चा की है। महात्मां गांधी तथा डॉ . भगवानदास जैसे आधुनिक युग के पुरूषों ने भी उनकी चर्चा की हैं। मत देने के योग्य कौन है,ये महत्वपूर्ण प्रश्न है। 'मत प्राप्त करना' वाक्यांश महत्वपूर्ण है, और इसमें अनेक गुत्थियाँ जुड़ी हुई हैं। मेरा विश्वास है कि उपाध्याय जी के कुछ प्रशंसक इस प्रश्न को हाथ में लेंगे और इस लेख में निहित गुत्थियों को समझने–सुलझाने को प्रयास करेंगे। मैं नही समझता के इन और अधिक परिचय देने की आवश्यकता है। वे शीघ्र ही जनता के सामने आने वाले हैं और मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मैं भी इस प्रकिया में, भले ही अत्यंत अल्प परिणाम में क्यों न हो, संलग्न हूँ।

– पूर्व मुख्यमंत्री
(उत्तरप्रदेश)

सूचना

कृपया आप ~~अपना ई~~–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल पर भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । – सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com